श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति
सा विद्या या विमुक्तये
सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆ नवम्बर - 2024

ऐनरोलमेन्ट नंबर 6 शहर ______

विद्यार्थी का नाम ______

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	जीवदया
(२)	कर्तव्य
(३)	तृण
(४)	शिखरी
(५)	करुणा सागर
(६)	कुशल
(७)	सिंह
(८)	विरति
(९)	दाक्षिण्यता
(१०)	गुलामी
(११)	विघ्न
(१२)	कायोत्सर्ग
(१३)	शठता
(१४)	विश्वभूति
(१५)	सरलता
(१६)	धिक्कार
(१७)	अमृत
(१८)	धर्म
(१९)	मरुली
(२०)	नागेन्द्र

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	मात्रक
(२)	विशाला
(३)	माघकवि
(४)	कालसौरिक
(५)	संवर
(६)	कंस
(७)	सरलता
(८)	बाङ्‌नियमिनी
(९)	शरीर
(१०)	गर्भज
(११)	अरिहंत चेइयाणं
(१२)	पोरिसी
(१३)	तृषा (प्यास)
(१४)	स्थूलिभद्र
(१५)	यशोमति
(१६)	हे भगवान
(१७)	यति
(१८)	वहाँ
(१९)	बुद्धि से
(२०)	अज्ञान

Continued (प्रश्न-२, ५–१५ in middle-right column):

(५)	बावीस
(६)	गृहो
(७)	चर्म
(८)	भरतक्षेत्र
(९)	पूजन
(१०)	लेखन
(११)	मनोगुप्ति
(१२)	हृदय से
(१३)	गाय
(१४)	मंत्र
(१५)	अंतरद्वीप

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	वध
(२)	मुझे
(३)	कछुआ
(४)	पाये फिर भी

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	6	(६)	5
(२)	7	(७)	9
(३)	4	(८)	1
(४)	8	(९)	2
(५)	10	(१०)	3

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	5
(२)	108
(३)	7
(४)	83
(५)	900
(६)	13
(७)	12
(८)	500
(९)	9
(१०)	42

प्रश्न-६ ✓ या × / प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	✓	(१)	12
(२)	✓	(२)	23
(३)	×	(३)	17
(४)	×	(४)	22
(५)	✓	(५)	11
(६)	✓	(६)	26
(७)	×	(७)	13
(८)	×	(८)	9
(९)	×	(९)	18
(१०)	×	(१०)	21

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. तिर्यंच पंचेन्द्रिय मे एक है खेचर जीव। खेचर जीव रोमसे बने हुए पंखो वाले तथा चर्म से बने हुए पंखो वाले होते है। मनुष्य लोक से बाहर समुग्ग पक्षी एवं वितत पक्षी होते हैं। खेचर जीव दो प्रकार के होते है - 1) रोम से बने पंख वाले रोमज कहलाते है। (उदा. पोपट, मैना 2) चर्म (चमड़े) के पंख वाले पक्षी चर्मज कहलाते है। (उदा. चमगादड। मनुष्य लोक मे यानी अढीद्वीप मे पक्षी बैठते है तब उनके पंख सिकुडे हुए रहते है और आकाश मे उडे तब पंख खुले होते है। लेकिन मनुष्यलोक के बाहर सिकुडे हुए पंख वाले जीव बैठते चलते या उड़ते उनके पंख सिकुडे हुए ही रहते है और खुले पंख वाली पक्षीओं के पंख बैठते, चलते या उडते समय खुले ही रहते है।

२. जावंत केवि साहू सूत्त को सर्व साधू वंदन सूत्र भी कहते है। भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्रो मे रहे हुए जो कोई भी साधुओ, मुनिओ मन, वचन और काया से पापवाली प्रवृत्ति करते नही, करवाते नही तथा करने वालो की अनुमोदना करते नही, उन सभी को मै प्रणाम करती हूं। इस सूत्र से पंद्रह कर्मभूमि मे रहे सभी साधुओं को वंदन किया गया है।

३. सुलस ने पिता की दशा देखी और वो चिंतन करने लगा, ये तो पाप के प्रत्यक्ष इस भव मे दिखाई देने वाले फल है। परलोक मे दुर्गति निश्चित है। तो वहाँ कितने दीर्घावधी के लिए दुख भोगना पड़ेगे? भाव बुरे तो भव बुरा और भव बुरा तो भाव बुरे यह चक्र चालू होगा। तो इसका परिणाम क्या आएगा? नहीं नही मुझे दुर्गति मे जाना नही है। ना ना मुझे दुर्गति मे ले जाए ऐसे पापकर्म मुझे करना नही। सुलस सब को सत्यधर्म समझाता है और पाप से हटाता है और खुद परमात्मा के बताये हुआ श्रावक धर्म स्वीकारता है।

४. श्री पार्श्वप्रभू के छठे भव मे मरुभुती का जीव शुभंकर नगरी मे वज्रनाभ नामक राजा हुए। वहाँ श्री क्षेमकर तीर्थंकर प्रभु पधारे। राजा उनके पास जाकर वंदना कर, देशना सुनकर प्रतिबोधीत हुआ और उसने दीक्षा लेली। फिर ग्यारह अंगो का अभ्यास कर उस मुनी ने जंगाचरण की लब्धी प्राप्त की। उस लब्धि के बल से सुकच्छ विजय मे ज्वलन पर्वत पर जाकर कायोत्सर्ग मे रहे। इधर कमठ का जीव पाँचवी नर्क के असह्य दुःख भोगकर वहाँ से निकलकर संसार में बहुत भव करते हुए उसी पर्वत पर कुरंग नामक भिल्ल हुआ। साधु को देखकर भिल्ल को वैरभाव उत्पन्न हुआ उसने साधू को बाण मारा, उससे मुनि तुर्त ही मृत्यु को प्राप्त हुए। यह प्रभु का छठा भव है।

५. अज्ञान परिषह : कर्म के उदय से शायद प्रज्ञा सूक्ष्म न मिलने से गृहस्थों से प्रश्न के जवाब न दे सके तो उद्वेग न धारण करे। श्रुत ज्ञानावरणीय कर्म का उदय मानकर समता धारण करे वह अज्ञान परिषह जय कहलाता है।

प्रज्ञा परिषह :- साधु की प्रज्ञा अच्छी हो तो अच्छा पढे, बहुश्रुत बने। अनेकों के पुछे गए प्रश्नो के संतोषकारक जवाब भी दे सके, फिर भी अहंकार न करे परन्तु पूर्व के महाज्ञानीओ को याद करे वह प्रज्ञा परिषह जय है।